मेवाड़ के शासक राणा प्रताप सिंह व
उनका घोड़ा चेतक

जानवरों में स्वामी भक्ति के भाव को इतिहास ने सुनहरी शब्दों में
लिखा है ।
सर्वोच्च श्रेणी में मेवाड् के राणा प्रताप का घोड़ा चेतक आता है।
में संसार ,था भी अद्वितीय व था अनुपम जो था नीला रंग उसका
तो न घोड़ा का रंग नीले ,में काल भी किसी तथा में देश भी किसी
गया है । देखा ही न गया सुना

बताया गया कारण का रंग नीले इसके में कथा लोक एक परन्तु
है ।
,हैं साधू के संम्प्रदाय नाथ लोग ये) क़बीले कालबेलिया एक कि
किया अभिषेक का मछेंन्द्रनाथ चेला अपने ने गोरखनाथ मंहन्त
के रीति ,भिजवाया गया बुलावा को साधुओं नाथ के भर देश तो
जिनके थे हुऐ आये साधू इतने क्योंकि ,है होता भंड़ारा अनुसार
कहा से मेहमानों उन्होंने तो ,था नहीं सम्भव बनवाना भोजन लिये
,करो ध्यान का गुरू और लो ढ़क को कमंड़लों अपने अपने आप
उनमें ,जायगा आ भोजन भावक मन में कमंड़ल में क्षणों ही कुछ
की भोजन से इरादों के लेने परीक्षा की गुरू ने साधुओं दो से
कपड़ा से कमंड़ल जब उन्होंने ,किया ख़्याल का साँप जगह
किया ध्यान ने अंतर गोरखनाथ गुरू ,मिला साँप उन्हें तो हटाया
बुलाया पास उनको ,हैं गये रह भूखे साधू दो कि पाया उन्होंने तो
दिया शाप उनको ने गुरू फिर ,खाओगें क्या तुम अब पूछा और
वंशज तुम्हारे और रहोगें बने गृहस्थी ,दो त्याग संन्यास तुम
ही ये ,पेट भरेंगे ही से कमाई उनकी तथा पालेंगे साँप आजीवन
उन्हें ,पकड़ने साँप से जंगल इनको ,हैं कहलाते कालबेलिया
व ,है होती हासिल महारत में निकालने ज़हर का उन ,पालने
सां◌े साँपों को
की क़बीले उस (हैं माँगते कपड़ा पैसें कर दिखा दिखा में शहरों
ने लोगों के कबिलें तो की हठ की करने शादी से राणा ने लड़की
करना दर्शन के राणा केवल मैं कहा उसने तो ,उसे समझाया
और गये कर मिल सब ,हुँ चाहती
हत्या आत्म वह वरना दो दे दर्शन कि की गुहार से राणा उन्होंने
वे की समझाया और बुलाया को कन्या उस ने राणा,है सकती कर
वे ,हैं नहीं पत्निक बहु तरह की राजाओं अन्य ,हैं चुके कर शादी
उस उन्होंनें ,हैं करते प्यार समान पुत्री को लड़कियों की प्रजा
और कोई तू ,हुँ करता आदर का भावना तेरी मैं कहा से लड़की
में माह एक मैं कहा ने लड़की उस ,कह तो है रखती अभिलाषा
आप तो लेना पी आप उसे हुँ आती लेकर विष का सॉप उड़न
लेकिन ,लाई ज़हर में प्याली एक वह बाद माह एक लगेंगे। उड़ने
प्रजा अपनी ने राणा लेकिन दिया रोक उसे दरबारियों के राणा
लेकिन है नहीं डर का मृत्यु को मेरे की कहा हुऐ करते विश्वास पर
,हुँ चाहता प्रकृति के तरीक़े से ही रहना ,चाहता नहीं उड़ना मैं
यह मैं हुऐ करते आदर का भावना तेरी- कहा से लड़की उन्होंने
ज़हर वह को घोड़े के राणा । हुँ सकता पिला को घोड़े मेरे ज़हर
वह में दिनों कुछ ,था बुर्राक सफेद रंग का घोड़े । गया पिलाया
जिसे । लगा भरने छलाँगें लम्बी लम्बी वह तथा ,लगा पड़ने नीला
। थे सकते ले में क़ाबू ही जी राणा केवल

अकबर बादशाह मेवाड़ के राणा से नाराज़ थे क्योंकि राजपूताने
के अन्य सभी राजाओं की तरह राणा ने उसकी आधीनता
स्वीकार नहीं की । जयपुर के राजा सवाई मानसिंह नें तो अपनी
बहन जोधा को एक मुसलमान आक्रमण कारी यवन के साथ
व्याह भी दिया, यही कारण था राणा सवाई मानसिंह से नाता
छोड़ चुके थे।
अकबर ने सवाई मानसिंह के नेतृत्व में मेवाड़ पर चढ़ाई करदी,
हल्दीघाटी में युद्ध हुआ,अकबर ने दो लाख सिपाहियों की सेना
सवाई मानसिंह व अपने लड़के सलीम के नेतृत्व में भेजी, ये दोनों
हाथी पर सवार थे, राणा की सेना केवल बीस हज़ार की थी ।
राणा अपने घोड़े चेतक पर सवार थे । मैदान ए जंग में राणा
अपने हाथ में भाला लिये चेतक को हुक्म देते हैं की सलीम के
हाथी के माथे पर छलाँग लगा, निडर चेतक हाथी की सूँड़ पर चढ़
गया, राणा ने भाला फेंका, लेकिन बीच में महावत खड़ा हो गया,
और भाला उसके सीने में धँस गया और शहज़ादा सलीम बच
गया। चेतक हाथी से उतरा और फिर चक्कर लगा कर दूबारा
हाथी के माथे पर चढ़ा, इसी बीच हाथी की सूँड़ में बंधी तलवार ने
चेतक की एक टाँग काट दी। सलीम फिर बच गया।
तीन टाँगों पर चेतक मैदान में अड़ा रहा, ख़ून के फ़व्वारेँ छूट रहे
थे,
राणा के सेनापति ने राणा को कहा चेतक का अन्त होने वाला है,
आप रण छोड़ कर चले जाओ, पैदल कब तक लड़ोंगें, और आप
रहोगें तो फिर युद्ध करेंगें।राणा ने बात मान ली।
राणा तीन टाँगों वाले चेतक को लेकर हल्दीघाटी छोड़ कर बीस
मील दूर चले गये, रास्ते में तीन नदियाँ पड़ती थी, उन को
छलाँगा,
फिर चेतक ने राणा की गोद में दम तोड़ दिया ।
राणा जी ने उस की याद में स्मारक बनवाया ।
हर साल उस छतरी पर मेला लगता है, लोग श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं
।
शादी के घर में परिवार की औरतें जब देवी देवताओं को बुलाने
का रात्रि जागरण करती है तो चेतक पर गीत गाती है ।
“ अजब बनयों चेतक घुड़लियों तू अजब बन्यों “

लेखकः
शिवराज गोयल
२१/११/२०१९
Email id-bul7603@gmail.com
पहली बार लिखी हैं
पता -ए/१०१ चित्रकूट बिल्डिंग , ऋद्धि विनायक अस्पताल
के बगल में, ऋद्धि विनायक मंदिर की गली, एस.वी. रोड,
मालाड (पश्चिम), मुंबई-४०००६४
मोःनः-९२२३१८६५३०/९१३७३३७६२१